तृतीयमत – आचार्य भट्टनायक ने सांख्यदर्शन के आधार पर रसानुभूति के जिस मार्ग को प्रतिपादित किया उसे भारतीय काव्यशास्त्र में भुक्तिवाद कहा गया है। भट्टनायक ने संयोग का अर्थ भोज्य भोजक सम्बन्ध तथा निष्पत्ति का अर्थ भुक्ति से लिया है। भट्टनायक के अनुसार भावकत्व शक्ति से काव्यार्थ या रस का साधारणीकरण हो जाता है और भोजकत्व व्यापार से उसका आस्वादन दर्शकों या पाठकों को होता है। भट्टनायक के इस मत में स्थायीभाव से लेकर रस की उत्पत्ति तक काव्य की तीन शक्तियाँ – अभिधा, भावकत्व और भोजकत्व हैं। इनमें से अभिधा के द्वारा हमें काव्यगत सामान्य अर्थ का ज्ञान होता है। भावकत्व द्वारा पाठक का हृदय वैयक्तिक सम्बन्धों को छोड़कर साधारण मनुष्य की भावभूमि पर आ जाता है। रजस-तमस विहीन सात्विक मन ही काव्य रस का भोक्ता बनता है यही भोजकत्व व्यापार है।

इस मत पर एक आक्षेप किया जाता है कि इन नवीन काव्य शक्तियों को मानने का शास्त्रीय आधार क्या है? बावजूद इसमें प्रेक्षक-दर्शक की समस्या का समाधान हुआ है। भट्टनायक ने रस की स्थिति दर्शक के हृदय में मानी है, यह सर्वथा उचित है।

चतुर्थमत – अभिव्यक्तिवाद के प्रतिष्ठाता अभिनवगुप्त के अनुसार 'संयोग' का अर्थ व्यंग्य-व्यंजक सम्बन्ध तथा 'निष्पत्ति' का अर्थ अभिव्यक्ति है। अभिनव गुप्त भावकत्व तथा भोजकत्व नामक शक्तियों का कार्य व्यापार या ध्वनि से लेते हैं क्योंकि रति आदि स्थायीभाव पाठकों के अन्तःकरण में वासना या संस्कार रूप में रहते हैं जो कि विभावादि के संयोग से अभिव्यक्त होते हैं। अभिनव ने सामाजिक के हृदयस्थित स्थायीभाव को रसानुभूति का निमित्त कारण माना है, जो कि बीज रूप में मानव मन पड़े रहते हैं। ये स्थायी भाव ही साधारणीकृत होकर प्रेक्षक को ब्रह्मानंदसहोदर आनंद रस में निमग्न कर देते हैं।

उपर्युक्त चार आचार्यों के अतिरिक्त कुछ अन्य आचार्यों ने भी रस सूत्र का विवेचन किया है लेकिन निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि जितना अधिक वैज्ञानिक एवं ग्राह्य सिद्धान्त अभिनव गुप्त का है उतना अन्य आचार्यों का नहीं।

रस निष्पत्ति विषयक सिद्धान्त - संक्षेप - 27.04.2020 (1)

N.G.P.R. - हिन्दी विभाग

रस निष्पत्ति के मूल प्रवर्तक 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता आचार्य भरत के अनुसार रस-निष्पत्ति सम्बन्धी सूत्र निम्नवत है —

"विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः"

(विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रसनिष्पत्ति होती है)

विभाव - वे व्यक्ति या पदार्थ जो भावोत्तेजना के मूलकारण हैं विभाव कहलाते हैं। विभाव के दो प्रकार - आलंबन और उद्दीपन।

आलम्बन विभाव वे हैं जिनका आलम्बन लेकर रति, हास, क्रोध, शोक, भय, उत्साह, विस्मय आदि भाव जाग्रत होते हैं; नायक-नायिका को देखकर।

उद्दीपन विभाव वे कहलाते हैं जिन वस्तुओं या स्थिति को देखकर रति आदि स्थायी भाव तीव्र या उद्दीप्त होने लगते हैं, जैसे - चन्द्रोदय, एकान्त स्थल।

अनुभाव - स्थायीभावों के उदय होने के पश्चात जो शारीरिक विकार दिखाई देते हैं वे अनुभाव कहलाते हैं। अनुभाव के चार प्रकार - कायिक, मानसिक, आहार्य और सात्विक।

व्यभिचारीभाव - अनेक रसों में व्यभिचरण करने के कारण संचारीभावों को व्यभिचारीभाव कहा जाता है।

रसनिष्पत्ति विषयक विभिन्न मत —

प्रथम मत - आरोप या उत्पत्तिवाद के उद्भावक मीमांसक भट्टलोल्लट 'संयोग' शब्द का अर्थ सम्बन्ध तथा 'निष्पत्ति' शब्द का उत्पत्ति करते हैं। इनके मत के अनुसार विभावादि कारण है और रस कार्य। यह मत जिज्ञासुओं के समस्त जिज्ञासाओं का समाधान न कर सकने के कारण मान्य नहीं हुआ। विभाव और अनुभाव के साथ ही रस की उत्पत्ति होती है और उनके अदृश्य होते ही रस भी अदृश्य नहीं होता है। अतः विभावादि कारण तथा कार्य का सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है।

द्वितीय मत - अनुमितिवाद के उद्भावक आचार्य शंकुक ने भरत की निष्पत्ति को अनुमिति तथा 'संयोग' को अनुमाप्य - अनुमापक मानकर विभावादि को अनुमापक तथा रस को अनुमाप्य माना है। आचार्य शंकुक का अनुमितिवाद भी जिज्ञासुओं की समस्त जिज्ञासाओं का समाधान न कर सका; क्योंकि अनुमान से वास्तविक आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। अनुमान बुद्धि की क्रिया है, हृदय की नहीं, अनुमान से ज्ञान प्राप्त होता है अनुभूति नहीं; आनंद अनुभूति जन्य है।

B.A. I

मलबे का मालिक

मोहन राकेश

देश विभाजन के पश्चात जो साम्प्रदायिक दंगे हुए, परिणामस्वरूप जो हत्याएँ हुईं, मानव की मानवता दानव का रूप ले चुकी थी। लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो गये। सभी स्वार्थित हो चुके थे। जहाँ प्रेम और सौहार्द का वातावरण था वहाँ नफरत की दीवारें। जहाँ विश्वास था, विश्वासघात हुआ। उपर्युक्त पृष्ठभूमि पर कहानीकार ने मलबे का मालिक कहानी का हृदयविदारक और मार्मिक चित्रण किया है।

साढ़े सात साल के बाद वे लोग लाहौर से अमृतसर आये थे। हॉकी का मैच देखना था। इस सड़क पर मुसलमानों की कोई न कोई टोली घूमती नजर आ जाती थी। तेज बाजारों में घूमते हुए एक दूसरे को पुरानी चीजों की याद दिला रहे थे। सबकुछ बदला बदला सा लग रहा था। जिस रास्ते से भी पाकिस्तानियों की टोली गुजरती, शहर के लोग उत्सुकतापूर्वक उस तरफ देखते रहते।

बाजार बाँसा अमृतसर का एक उजड़ा सा बाजार है, जहाँ विभाजन से पहले ज्यादातर निचले तबके के मुसलमान रहते थे। बाजार बाँसों में विभाजन की बर्बरता आग अमृतसर की सबसे भयानक आग थी। ज्यादातर लोग तो अपने मकान के साथ ही शहीद हो गये थे। उस दिन उस टोली के मुसलमानों में एक दुबला-पतला बूढ़ा मुसलमान ही उस वीरान बाजार में आया लेकिन उसे विश्वास नहीं हुआ कि यह वही गली है जिसमें वह जाना चाहता है। सब कुछ बदल गया, मगर बोलियाँ नहीं बदलीं," बूढ़े मुसलमान ने अपने आप से कहा। उसी समय एक नवयुवक आया और पूछा, "कहिए मियाँजी, यहाँ किसलिए खड़े हैं? बेटे, तुम्हारा नाम मनोरी है न? "आपको मेरा नाम कैसे मालूम है?" साढ़े सात साल पहले तुम छोटे थे। बूढ़े ने कहा इस उसी गली कहकर बूढ़े ने मुस्कराने की कोशिश की। बूढ़े ने कहा इस उसी गली में रहते थे। मेरा बेटा चिरागदीन तुम लोगों का दर्जी था। आप गनी मियाँ हैं। गनी मियाँ बीते दिनों को याद कर अफसोस करते हैं, उन्हें उस बात का पश्चाताप है कि मेरा चिरागदीन मेरे साथ पाकिस्तान जाता तो आज उसका परिवार जीवित रहता। बाल सफेद होने के बावजूद चिरागदीन के बाप अब्दुल गनी को पहचानने में लोगों को दिक्कत नहीं हुई। मनोरी ने एक मकान की ओर इशारा करते कहा - "वह था तुम्हारा मकान," "यह तुम्हारा मकान उन्हीं से हुआ मलबा? उसने अविश्वास के साथ प्रश्न किया। उन्हीं दिनों जल गया था"।

मुहल्लेवाली जो गनी मियाँ से परिचित थे उनलोगों के मन यह बात कुरेदने लगी कि आज गनी मियाँ को सब पता चल जायेगा कि कैसे रक्खे पहलवान और उसके साथियों ने चिराग़दीन के परिवार को उसी रात पाकिस्तान भेज दिया था तथा लाशें बाद में नहर के पानी में फेंकी गयी।

कुछ दिनों बाद पहलवान ईंधन सामग्री लेकर घर में रखा था न जाने कौन उस घर में आग लगा दी। चिराग़दीन का घर जलकर राख हो चुका था। रक्खे पहलवान यह कसम खाते थे कि वह आग लगाने वाले को जिंदा जमीन में गाड़ देगा क्योंकि उस मकान पर नजर रखकर ही उसने चिराग़ को मारने का निश्चय किया था। इस मलबे को रक्खा अपनी जायदाद समझता था। मलबे के ढेर में गनी बैठा तो छाती-राख का स्पर्श करते हुए — तू कहाँ चला गया ओ चिराग़दीन।
मलबे के ढेर में बैठा गनी को देखकर लच्छा ने रक्खा से कहा कि पाकिस्तान से आया चिराग़दीन का पिता गनी मलबे पर बैठा है। मलबा किसका है? मलबा हमारा है।"

रक्खा से गनी पूछता है - बोल रक्खे, यह सब किस तरह हुआ? तुमलोगों में भाई-भाई सी मुहब्बत थी। तुमलोग उसे पनाह दे सकते थे। रक्खा भीतर से काँप गया और बात को आगे बढ़ाते हुए कहा "पाकिस्तान में तुमलोगों के क्या हाल हैं? गनी ने कहा - चिराग़ नहीं तो कुछ भी नहीं। चिराग़ को रक्खे पर भरोसा था कि रक्खे के रहते कुछ भी नहीं हो सकता। गनी ने देखा रक्खे का चेहरा सुख गया। गनी ने कहा - खुदा नेक की नेकी बनाये रखे और बद की बदी माफ करे। गली के लोगों ने रक्खे से पूछा - गनी पाकिस्तान से आया था, हाँ - फिर वह चला गया।

रात होने पर रक्खा रोज गली के बाहर दुकान के तख्ते पर आ बैठा। अट्टे के गुर बतलाने वाला रक्खा लोगों को की कथा सुनाने लगा। सुनसान रात में एक कुत्ता मलबे के एक कोने में लेटा हुआ था। वह आवाज सुनकर भौंकता था। रक्खा पहलवान उसे हटाने की कोशिश की लेकिन कुत्ता रक्खा पहलवान के तरफ मुँह कर भौंकने लगा - पहलवान के लाख कोशिश के बावजूद कुत्ता नहीं भागा, सुनसान देखकर कुत्ता एक बार फिर मलबे पर लौट गया और कोने में बैठकर कान फटकफटकर गुर्राने लगा।

उपन्यास की परिभाषा — तिथि 29.4.20 - प्रथम श्रेणी - बाद के काल में। हिन्दी साहित्य में गद्य की सर्वाधिक लोकप्रिय और स्थापित विधा के रूप में उपन्यास के अन्तर्गत मनुष्य के मन की अतल गहराई से लेकर सभी सम्पूर्ण सांसारिक क्रियाएँ इसमें समाहित है। आज के जीवन के सूत्र है — भौतिकता, स्वच्छता, दुर्लता, मांसलता और बौद्धिकता। इन तत्वों के सार से ही उपन्यास का स्वरूप गठित हुआ है।

उपन्यास शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ इसके स्वरूप वैशिष्ट्य को भलीभाँति स्पष्ट करता है। उप-न्यास अर्थात पास में स्थित वस्तु या जीवनानुभूति। उपन्यास केवल कुछ तात्कालिक संवेगों का उद्घाटक अथवा मात्र शिल्प का प्रदर्शन साधन नहीं है अपितु इसमें एक जीवन दृष्टि, उसकी क्रियाशीलता और परिणाम ही इसका सर्वस्व है।

उपन्यास की परिभाषा के संदर्भ में यहाँ तक कहा गया है कि सफल उपन्यास परिभाषाओं के परे होता है इसके बावजूद उपन्यास की असंख्य परिभाषाएं प्रत्येक समर्थ भाषा में उपलब्ध है —

प्रेमचंद के अनुसार → "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मानता हूं। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"

डॉ॰गोपाल — "उपन्यास पर्याप्त लम्बाई में लिखित वह गद्य कथा है जो पाठक को एक काल्पनिक पर यथार्थ संसार में ले जाती है, जो लेखक द्वारा सृष्ट होने के कारण नवीन होता है।"

डॉ॰श्यामसुन्दरदास — "मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा उपन्यास है।"

आ॰हजारी प्र॰ द्विवेदी — "इस युग में उपन्यास एक साथ ही अत्याचार का समुदाय, बहस का विषय, इतिहास का चित्र और पाकेट का थियेटर हो गया है।"

According to Henry fielding — "Novel is a comic epic in Prose"

Ralf Fox — "Novel is the epic art of our modern society"

उपन्यास की ऐसी महाकाव्यात्मक गरिमा और वैविध्य पहचान देनेवाली विचारधाराओं पर आधारित परिभाषाएं इतनी ही नहीं है। भारतीय और पाश्चात्य विचारकों और कथाकारों द्वारा प्रदत्त उपन्यास की परिभाषाओं की विशाल तालिका बनाई जा सकती है लेकिन इन तमाम परिभाषाओं के आलोक में एक बात प्रतिध्वनित होती है कि उपन्यास हमारे जीवन का समग्र दर्पण है।

B.A. III – अभ्यासकार्य – वस्तुनिष्ठ प्रश्न 30.4.2020.

काव्यशास्त्र N-GPR- हिन्दी विभाग

1. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' - किस आचार्य की उक्ति है —

   – आचार्य विश्वनाथ

2. पंडित जगन्नाथ के अनुसार काव्य लक्षण बतलावें —

   "रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम्"

3. औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन हैं?

   – आचार्य क्षेमेन्द्र

4. आचार्य कुन्तक किस सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं?

   वक्रोक्ति सम्प्रदाय

5. 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता का नाम बतलावें —

   आचार्य भरतमुनि

6. 'काव्यप्रकाश' के रचनाकार कौन है? —

   मम्मट

7. 'रसराज' किस रस को कहते हैं? —

   शृंगार रस

8. 'अनुमितिवाद' के उद्भावक आचार्य कौन हैं? —

   आचार्य शंकुक

9. 'अभिव्यक्तिवाद' के प्रतिष्ठाता कौन हैं? —

   आचार्य अभिनव गुप्त

10. करुण रस का स्थायीभाव क्या है? —

   – शोक

B.A.I – वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 1.5.20 – ऑचल के पंछी-बाद के कक्षा

G.P.R – हिन्दी विभाग

1. 'मजदूरी और प्रेम' निबंध के निबंधकार का नाम बतलावें।
   उ० – सरदार पूर्ण सिंह
2. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के लेखक का नाम क्या है?
   उ० – आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. 'मैला आँचल' उपन्यास के रचनाकार कौन हैं?
   – फणीश्वर नाथ रेणु
4. 'नदी के द्वीप' के ~~उपन्यास~~ उपन्यासकार का नाम लिखें।
   उ० – अज्ञेय
5. एक ललित निबंधकार का नाम लिखें।
   उ० – विद्यानिवास मिश्र
6. 'कामायनी' किसकी रचना है?
   उ० – जयशंकर प्रसाद की
7. 'तमस' के रचनाकार का नाम लिखें।
   उ० – भीष्म साहनी
8. 'आधे-अधूरे' के रचनाकार कौन हैं?
   – मोहन राकेश
9. 'अब्दुल गनी' किस कहानी का पात्र है।
   उ० – मलबे का मालिक
10. 'चित्रलेखा' ऐतिहासिक उपन्यास है या आँचलिक।
    उ० – ऐतिहासिक

B.A III

शब्द शक्ति की परिभाषा - 9.5.2020

N-GPR. हिन्दी विभाग

भारतीय काव्य शास्त्र मे शब्दशक्तियों के सम्बन्ध मे पर्याप्त विचार हुआ है। व्याकरणशास्त्र, न्यायदर्शन, मीमांसादर्शन तथा साहित्य आदि मे शब्द तथा शब्द शक्तियो के सम्बन्ध मे अनेक विवेचन किये जा चुके है। शब्द की अभिधा, लक्षणा और व्यंजना नामक तीन शक्तियाँ चिर प्रसिद्ध है।

शब्द एवं अर्थ के सम्बन्ध मे विचार करने वाले तत्व को शब्दशक्ति कहते हैं। शब्द तथा वाक्य की सार्थकता उसके अर्थ मे है। अर्थवान् शब्द ही शब्द कहलाते हैं। जिस शक्ति द्वारा अर्थबोध होता है उसे शब्दशक्ति कहते हैं- शब्दार्थ सम्बन्धः शक्ति।

शब्द की शक्ति असीम है। शब्द, उच्चारण का ही मन, कल्पना और अनुभूति पर प्रभाव पड़ता है। अतः जिस शक्ति के द्वारा शब्द का यह अर्थगत प्रभाव पड़ता है, वही शब्दशक्ति कहलाती है। शब्द का अर्थबोध कराने वाली शक्ति ही शब्द शक्ति है। वह एक प्रकार का शब्द और अर्थ का समन्वय है। शब्द का व्यापार अर्थगत व्यापार है।

हिन्दी के रीतिकाल आचार्य चिंतामणि ने लिखा है कि, "जो सुन पड़े सो शब्द है, समुझि परै सो अर्थ" अर्थात जो सुनाई पड़े वह शब्द है, तथा उसे सुनकर जो समझ मे आवे वह उसका अर्थ है।

जितने प्रकार के शब्द होंगे, उतनी ही प्रकार की शक्तियाँ होंगी। शब्द वाचक, लक्षक और व्यंजक तीन प्रकार के होते हैं। तथा इन्हीं के अनुरूप तीन प्रकार के अर्थ-वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ होते हैं। शब्द और अर्थ के अनुसार ही शब्द की तीन शक्तियाँ - अभिधा, लक्षणा और व्यंजना होती है।

निष्कर्षतः शब्द का कार्य किसी अर्थ की अभिव्यक्ति तथा उसका बोध कराना होता है। इस प्रकार शब्द एवं अर्थ का अभिन्न सम्बन्ध है। शब्द एवं अर्थ का सम्बन्ध ही शब्दशक्ति है।